Rohtas Mahila College, Sasaram. 26-06-21
Dr. Aman Murmu, Dept of psychology, B.A. Part I H. Pr-I

(Topic - रचनात्मक चिंतन - Creative thinking)

रचनात्मक चिंतन वास्तव में चिंतन का एक महत्वपूर्ण प्रकार है। चिंतन के इस पक्ष का संबंध ऐसी कल्पनाओं से है, जिसे हम रचनात्मक चिंतन कहते हैं। आयु में वृद्धि के साथ साथ रचनात्मक चिंतन के परिणाम धीरे-धीरे जनसाधारण अद्भुत चमत्कार दिखलाते हैं। रचनात्मक कार्य करने वाले व्यक्ति भी यह नहीं समझ पाते हैं कि उनके रचनात्मक रचनात्मक कार्य के पीछे कौन सी मानसिक क्रियाएँ सक्रिय रही है। दूसरी बात यह है कि रचनात्मक चिंतन हमारे दैनिक जीवन के चिंतन से काफी भिन्न है।

रचनात्मक चिंतन की समस्याएँ :-

रचनात्मक चिंतन की समस्याएँ निम्नलिखित हैं :-

(i) ~~स्रष्टा~~ स्रष्टा का व्यक्तित्व - विज्ञान कला आदि क्षेत्रों में रचनात्मक चिंतन के बढ़ते बढ़ते हुए उपयोग की दृष्टिकोण से वैज्ञानिकों या कलाकारों के व्यक्तित्व को समझना आवश्यक हो गया है। कुछ अध्ययनों में व्यक्तित्व के कुछ खास पक्ष को देखने का प्रयास किया गया है और कुछ अध्ययनों में व्यक्तित्व का समग्र विश्लेषण किया गया है। इस सम्बंध में फ्रायड (Freud) का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

(ii) रचनात्मक योग्यताओं का विकास :- समस्या यह है कि रचनात्मक चिंतन का विकास कैसे होता है। बच्चों में रचनात्मक चिंतन के विकसित होने में कौन कौन से कारक सहायक होते हैं। इस सम्बंध में हमारी जानकारी काफी सीमित है। रचनात्मक योग्यता के मापन के सम्बंध में हमारी जानकारी अधिक है। इस योग्यता के विकास को समझने के लिए भी प्रयास किये गये हैं।

(iii) कलाकार तथा अकलाकार :- (Artist and non artist) :- रचनात्मक चिंतन के सम्बंध में कलाकार तथा अकलाकार के ~~सम्बंध में~~ व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन वाह्य रूप से करना भी एक महत्वपूर्ण समस्या है।

(iv) कलात्मक रचना के ~~मनोवैज्ञा~~ मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त :- इस समस्या के अंतर्गत रचनात्मक कार्य के मनोवैज्ञानिक

Scanned with CamScanner

सिद्धान्तों को समझने का प्रयास किया जाता है। जैसे - कला को अधिक बनाने के सफल बनाने के लिए प्रत्यक्षीकरण के गेस्टाल्ट धारणाओं का उपयोग किया जाता रहा है। इसी तरह सागो (1947) ने संगीत के क्षेत्र में तथा मायर (1942) ने चित्रकला के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को समझने का प्रयास किया।

(v) प्रयोगात्मक सौन्दर्य :- यहाँ व्यक्ति पर कला के प्रभाव को देखना प्रधान उद्देश्य है। इस सम्बंध में उडवर्थ (Wood worth, 1938) का अध्ययन महत्वपूर्ण है। इसी तरह ऑगडेन (Ogden, 1942) ने कोफ्का (Koffka, 1940) ने भी प्रयोगात्मक सौन्दर्य के सम्बंध में महत्वपूर्ण प्रयास किये।

(vi) रचनात्मक चिंतन में मानसिक प्रक्रियाएँ :- यहाँ समस्या यह है कि रचनात्मक कार्य में निहित मानसिक क्रियाओं को कैसे निर्धारित किया जाये। यह एक महत्वपूर्ण समस्या है।

Scanned with CamScanner